International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 284-287

पुस्तकालयों के बदलते स्वरूप में पंचसूत्रों का महत्व

लक्ष्मीकान्त मिश्र

पुस्तकालयाध्यक्ष, वास्तुकला संकाय, डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

पुस्तकालयों की स्थापना तथा प्रसार एवं विविध प्रकार की विषाल मात्रा में पाठ्य सामग्रियों का संचयन तथा उनको व्यापक रूप से प्रयोग किये जाने की अभिधारणा और प्रयास के परिणाम स्वरूप पुस्तकालयों के समक्ष अनेक प्रकार की समस्यायें उत्पन्न होना स्वाभाविक था। लंदन प्रवास के दौरान डा0 रंगनाथन के विष्लेषणात्मक मस्तिष्क में यह विचार कौंधा कि, लंदन के विभिन्न पुस्तकालयों के संचालन के काम में लिए जा रहे सिद्धान्तों एवं नियमों का समान्यीकरण किया जाये, जिनके आधार पर मुख्यालय, संगठन, संचालन एवं प्रबन्ध को एक समान रूप दिया जा सके। इन नियमों की कल्पना का मूर्त रूप चिदम्बरम में आयोजित प्रान्तीय षिक्षा सम्मेलन में डा0 रंगनाथन द्वारा दिया गया। इन्हें डा0 रंगनाथन ने 'पुस्तकालय विज्ञान के सिद्धान्त' के रूप में अपनी पुस्तक 'प्रीफेस टू लाइब्रेरी साइंस' में प्रकाषित किया। बाद में ये पंच सूत्र स्वतन्त्र पुस्तक 'फाइव लॉज ऑफ लाइब्रेरी साइंस' के रूप में प्रकाषित हुए।

पुस्तकालय विज्ञान के पांच सूत्र निम्नलिखित है

1. पुस्तकें उपयोग के लिए हैं (Books are for use).
2. प्रत्येक पाठक को उसकी पुस्तक मिले (Every Reader his/her Book).
3. प्रत्येक पाठक को उसकी पुस्तक मिले (Every Book its Reader).
4. पाठक का समय बचाएं(Save the time of the Reader).
5. पुस्तकालय एक वर्धनषील संस्था है (Library is agrowing organism).

इन सूत्रों को पुस्तकालय विज्ञान में मूलकृत नियमों की संज्ञा दी गयी है। इनकी सार्थकता सिद्ध करने के लिए विष्वभर में लेख तथा पुस्तकें लिखी गई और सेमिनार, कान्फ्रेंस आदि आयोजित किये गये। समस्त विष्व के पुस्तकालय विज्ञानियों द्वारा इनको एक स्तर से स्वीकारा गया। डा0 रंगनाथन ने इन सूत्रों का प्रतिपादन कर पुस्तकालय विज्ञान को सुदृढ़ दार्षनिक और वैज्ञानिक आधार प्रदान किया।

यद्यपि डा0 रंगनाथन ने इन सूत्रों के Books शब्द का प्रयोग किया है परन्तु इन सूत्रों का विस्तार से विवेचन करते समय यह स्पष्ट होता है कि पुस्तकों से उनका तात्पर्य सभी प्रकार की ज्ञान सामग्री और सूचना से था। पुस्तक चयन, वर्गीकरण सूचीकरण, सन्दर्भ सेवा आदि पुस्तकालय विज्ञान की समस्त शाखाओं, प्रषाखाओं के काम इन सूत्रों द्वारा नियमित होते हैं। पुस्तकालय की प्रत्येक क्रिया परोक्ष या प्रत्यक्ष रूप से किसी न किसी प्रकार इन सूत्रों से जूड़ी हुई है।

प्रथमसूत्र

पुस्तकें उपयोग के लिए हैं (Books are for use)

डा0 रंगनाथन ने पुस्तकों के उपयोगपक्ष को महत्व या समाज की पुस्तकों की आवष्यकता का आकलन उस समय कर लिया था, जब कालेज, विष्वविद्यालय के पुस्तकालयों में पुस्तकें अलमारियों में तालों के अन्दर रखी जाती थी। उस कुप्रथा से प्रभावित होकर उन्होंने कहा कि पुस्तकें उपयोगार्थ हे। अर्थात पुस्तकों का उपयोग अधिकाधिक होना चाहिए। इसके लिए पुस्तकालय की स्थापना, संचालन व्यवस्था आदि ऐसी हो जिससे पुस्तकों को अधिकाधिक उपयोग किया जा सके।

पुस्तकालय की स्थापना ऐसे स्थान पर की जानी चाहिए जहां लोग सुगमतापूर्वक पहुंच सकें। मुख्य बिन्दु जो ध्यान देने योग्य हैं वह यह है कि पुस्तकालय के लिए स्थान का चुनाव करते समय पाठक की सुविधा, वातावरण की शुद्धता का पूर्णताः ध्यान रखना चाहिए। अतः किसी सार्वजनिक पुस्तकालय को शहर के केन्द्र या बाजार के आसपास होना चाहिए तथा विष्वविद्यालय पुस्तकालय को विष्वविद्यालय के बीचो बीच खोलना चाहिए। इससे अधिक से अधिक लोग पुस्तकालय में आते है तथा पुस्तकों का उपयोग बढता है और प्रथम सूत्र की मांग पूरी होती है।

पुस्तकालय भवन की बनावट, साजसज्जा, फर्नीचर तथा लाइटिंग व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जिससे कि उपयोगकर्ताओं को आराम और सुकून महसूस हो सके। पुस्तकालय सेवाओं के अनुसार पर्याप्त स्थान के साथ–साथ व्याख्यान कक्ष, प्रदर्षनी कक्ष तथा सेमिनार कक्ष आदि की भी व्यवस्था होनी चाहिए।

पुस्तकालयों का कार्य समय पुस्तकों के प्रयोग को अधिकाधिक प्रभावित करता है। पुस्तकालयों के खुलने और बन्द होने के समय का निर्धारण करते समय पाठकों के समय को ध्यान में रखना आवष्यक है। शैक्षणिक पुस्तकालयों का समय विद्यार्थियों के शैक्षणिक समय से पूर्व एवं पष्चात् भी होना चाहिए तथा सार्वजनिक पुस्तकालयों का समय प्रातः ओर सायं होना चाहिए इस समय अधिकांष लोग अपने निजी कार्यों से मुक्त होते हैं।

पुस्तकालय में पुस्तकों का उपयोग पाठक किस सीमा तक करते हैं यह इस बात पर निर्भर करता है कि पुस्तकों का चयन करते समय क्या उनकी आवष्यकताओं को ध्यान में रखा गया है। पुस्तकों के संग्रह से ही पुस्तकालय की पहचान बनती है अतः विषय क्षेत्र की उपयोगी पुस्तकों का ही चयन किया जाना चाहिए।

पुस्तकालय कर्मचारी अपने कार्य व्यवसाय में दक्ष होने चाहिए साथ ही पाठकों की सहायता करने की आन्तरिक प्रेरणा का भी होना आवष्यक है। उनमें पाठकों की मांगों को समझने तथा उन्हें पूरा करने की इच्छा होनी चाहिए। यह तभी संभव है जब पुस्तकालयों में योग्य व्यक्तियों की नियुक्ति होती है, उनका वेतनमान, कार्य करने की दषा तथा पदोन्नति की सम्भावनाएं अच्छी होती है। पुस्तकालयाध्यक्ष का सम्पूर्ण व्यक्तित्व तथा कर्मचारियों का अपने कार्यों के प्रति समर्पित भाव इस नियम के परिपालन में सहायक होगे।

मुक्त प्रवेष प्रणाली से तात्पर्य ऐसी व्यवस्था से है जहां उपयोगिता को सीधे पाठ्य पुस्तक तक पहुंचने की सुविधा की जाती है, अर्थात इस प्रणाली में पुस्तकों को अलमारियों में बन्द ताले के अन्दर नहीं रखा जाना चाहिए वरन् खुली अलमारियों में पुस्तकों को रखना चाहिए जिससे वह पाठकों को सीधे उपलब्ध हो सके।

द्वितीय सूत्र

प्रत्येक पाठक को उसकी पुस्तक मिले (Every Reader his/her Book)

इस सूत्र का मूल मंत्र है 'पुस्तकें सबके लिए हैं' अर्थात् पुराने समय में पुस्तकें कुछ खास लोगों – राजाओं, जमीदारों, बड़े – बड़े लोगों और अमीरों की जागीर हुआ करती थीं। जन सामान्य को इन वर्गों के पास संग्रहीत पुस्तकों तक पहुँचने और उनके उपयोग का अधिकार नहीं था। इस सूत्र ने पुस्तकालय को एक प्रजातांत्रिक संस्था के रूप में स्थापित किया जहां विकलांग, रोगी, कारीगर, विद्वान आदि सभी को उनकी आवष्कयता के अनुसार पुस्तकालय सुविधा उपलब्ध करायी जानी चाहिए।प्रत्येक पाठक को उसकी पुस्तक मिले' अर्थात् 'सबके लिए पुस्तकें' सूत्र के प्रतिपादन के लिए निम्नलिखित बिन्दुओं पर चर्चा होना आवष्यक है–

पुस्तकालय सेवाओं में हमेषा धन की कमी महसूस की जाती है इसमें शासन का सहयोग अनिवार्य है। वित्त की समस्या का समाधान तथा पुस्तकालय सेवाओं में सुदृढ़ीकरण के लिए सार्वजनिक पुस्तकालय अधिनियम आवष्यक है। अधिनियम के माध्यम से जिस पुस्तकालय प्रणाली की कल्पना यहां की गयी है वह वस्तुतः सार्वजनिक पुस्तकालय प्रणाली है जिसमें इन सभी के लिए पुस्तकालय सेवाओं की उपलब्धता सुनिष्चित कराने की आवष्यकता है। पुस्तकालय अधिनियम से पुस्तकालय अधिभार लगाने की व्यवस्था की जा सकती है अथवा अन्य रास्तों से पुस्तकालयों को वित्तीय रूप से सुदृढ़ किया जा सकता है।किसी भी पुस्तकालय के लिए सभी पुस्तकों का चयन कर पाना सम्भव नहीं होता है। इसके लिए यह आवष्यक है उपयोगकर्ताओं की आवष्यकता एवं रूचि का स्पष्ट ज्ञान और अधिक उपयोगी पुस्तकों को क्रय करना चाहिए।

प्रायः ऐसा देखा गया है कि पुस्तकालय में संसाधनों की उपलब्धता के बावजूद उपयुक्त, योग्य एवं पर्याप्त कर्मचारियों के अभाव में उपयोगकर्ताओं को समुचित पुस्तकालय सेवा उपलब्ध कराना संभव नहीं हो पाता है। अतः यह पुस्तकालय प्राधिकरण का दायित्व है कि पुस्तकालय के लिए पर्याप्त कर्मचारियों की व्यवस्था की जाए तथा कर्मचारियों का चयन करते समय सेवा भाव को प्रमुखता दी जाए। इसके साथ ही पुस्तकालय कर्मचारियों का दायित्व बनता है कि वे सेवा भावना को सर्वोपरि रखते हुए पुस्तकालय में कार्य करें।

पुस्तकालय का यह सूत्र 'पुस्तकालय उपभोक्ता प्रषिक्षण' (Library Users Ecucation) की ओर ध्यान आकर्षित करता है। इसके माध्यम से उपयोग कर्ताओं को पुस्तकालय नियमों की जानकारी दी जानी चाहिए तथा उन्हें यह बताया जाना चाहिए कि पुस्तकें सबके लिए है किसी एक या कुछ पाठकों के उपयोग के लिए नहीं। इस प्रकार प्रत्येक पाठक का यह दायित्व है किवह पुस्तकें समय से वापस करें, उनको छतिग्रस्त न करें तथा पुस्तकों को गलत स्थान पर लगाकर छुपायें नहीं।

इस सूत्र की मांग यह भी है कि पुस्तकालय सहभागिता को बढ़ावा देना आवष्यक है। इसके अनुसार स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय स्तरों पर संसाधन सहभागिता तथा नेटवर्क के माध्यम से एक पुस्तकालय के संसाधनों को अन्य पुस्तकालयों में उपयोग के लिए उपलब्ध कराया जाना चाहिए।

तृतीय सूत्र

प्रत्येक पुस्तक को उसका पाठक मिले (Every Book its Reader)

इस सूत्र का निहितार्थ है कि प्रत्येक पुस्तक का उपयोग होना चाहिए। यदि किसी पुस्तक का पुस्तकालय में उपयोग नहीं हो पा रहा है तो यह पुस्तकालय कर्मियों की अक्षमता का परिचायक है अथवा ऐसी व्यवस्था नहीं की गयी है जिससे पुस्तकों का अधिकाधिक उपयोग हो सके। इस सूत्र की सफलता के लिए विभिन्न सेवाओं की व्यवस्था की जा सकती है। सामान्य तौर पर यह देखा गया है कि जब पाठक अपनी वांछित पुस्तक के लिए सम्बन्धित अलमारी तक जाता है तो वहां उसे उसकी विषय वस्तु से सम्बन्धित अन्य पुस्तकें देखने को मिलती है जिनका उसे ज्ञान नहीं था अर्थात यदि उसे अलमारी तक जाने का अवसर न मिलता तो उसे उसी वांछित पुस्तक से संतोष करना पड़ता। इससे यह सिद्ध होता है कि मुक्त प्रवेष प्रणाली पुस्तकों में अधिकाधिक उपयोग के लिए आवष्यक होती है। हलांकि इसमें पुस्तकों के चोरी होने, क्षतिग्रस्त होने की संभावना बढ़ जाती है, परन्तु इनको अन्य उपायों से रोकने के प्रयास किये जाने चाहिए। इस प्रणाली से पुस्तक और पाठक में सीधा सम्पर्क स्थापित हो पाता है और पुस्तकों का अधिकाधिक प्रयोग सुनिष्चित होता है। यहां पर इस बात का विषेष ध्यान रखना होगा कि पाठक अपने आप पुस्तकों को शेल्फ पर न रखें क्योंकि पुस्तकों को गलत स्थान पर रखे जाने से उनके उपयोग में अत्य न्त कमी आ जाती है। ब्रिटेन में मुक्त प्रवेष व्यवस्था को 20वीं सदी के प्रारम्भ में लागू किया गया जब कि अमेरिका में इसके महत्व को 19वीं सदी के अन्तिम दषकों में ही समझ लिया गया था। अमेरिका में नियमानुसार मुक्त प्रवेष व्यवस्था ग्रन्थालयों के लिए आवष्यक मानी जाने लगी थी और पाठकों को पुस्तकों को देखने तथा चयन करने की पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान करना पुस्तकालय का आवष्यक तत्व माना गया।

पुस्तकालय में उपयोगकर्ताओं को आकर्षित करने के लिए पुस्तक प्रदर्षनियों, समाचार पत्र, पत्रिकाओं, रेडियो तथा दूरदर्षन आदि में पुस्तकालय का प्रचार प्रसार करना चाहिए। इससे पठन–पाठन को बढ़ावा मिलता है तथा पुस्तकों को पाठकों के पास पहुंचने में मद्द मिलती है।नवीन पुस्तकों की पुस्तकालय में उपयुक्त स्थान पर प्रदर्षिन करना चाहिए जिससे उन पर अधिकाधिक पाठकों की नजर पड़ सके और उनके उपयोग को बढ़ावा मिल सके।चल पुस्तकालय सेवाके माध्यम से भी पुस्तकों के उपयोग को बढ़ावा मिलता है। बहुत से लोग ऐसे होते है जो कि पुस्तकें को पढ़ना चाहते है परन्तु उनके पास पुस्तकालय जाने का समय नहीं है, अथवा संषाधन नहीं हैं ऐसी स्थिति में यदि उन्हें उनकी वांछित पुस्तक घर बैठे मिल जाए तो वे रूचिपूर्वक उसे पढ़ लेते हैं और इस प्रकार अधिकाधिक लोगों तक पुस्तकालय ऐवाएं पहुंचाने में सहायता मिलती है।

चतुर्थ सूत्र

पाठकों का समय बचाएं (Save the time of the Reader)

सभी के लिए समय का अपना महत्व है इसलिए समय का उपयोग सही कार्यों के लिए किया जाना चाहिए। आज के वैज्ञानिक युग में छात्रों, शोधार्थियों तथा वैज्ञानिक आदि के लिए समय का सदुपयोग करने में पुस्तकालय व्यवस्था को यथा संभव प्रयास करना चाहिए। पुस्तकालय में समय नष्ट होने से पाठक असन्तुष्ट होता है ओर इससे उसका पुस्तकालय प्रयोग कम हो जाता है ओर कभी – कभी तो बन्द ही हो जाती है इससे पुस्तकालय की लोकप्रियता में भी कमी आतीी है अतः यह आवष्यक है कि ऐसी व्यवस्थाएं की जानी चाहिए जिससे पाठकों के माहत्वपूर्ण कीमती समय को सदुपयोग कराया जा सके। यहां यह आवष्यक है कि पाठकों की और ज्यादा ध्यान देकर उन्हें ऐसा एहसास कराकर कि उनका काम किया जा रहा है एवं पुस्तकालय में सुखद वातावरण, बनाने की अच्छी व्यवस्था व मनोरंजन साहित्य की व्यवस्था करके उन्हें बोर होने से बचाने में सहायता मिलती है। ऐसी व्यवस्था होने से पाठक असन्तुष्ट नहीं होता और पुस्तकालय की लोकप्रियता भी बढ़ती है।

पाठकों का समय बचाने के क्रम में यह आवष्यक है कि पुस्तकालय में पुस्तकों की व्यवस्था इस प्रकार से की जाए कि एक विषय पर समस्त पुस्तकें एक ही स्थान पर मिल सके। इसके लिए यह आवष्यक है कि पुस्तकों का वर्गीकरण सावधानीपूर्वक किया जाए तथा पुस्तकों का सूचीकरण करते समय पाठकों के विभिन्न अभिगमों

को ध्यान में रखा जाना चाहिए। विभिन्न प्रविष्टियों की व्यवस्था भी ठीक होनी चाहिए। इसी प्रकार शेल्फ पर पुस्तकों का व्यवस्थापन की हमेषा जांच करते रहना चाहिए जिससे कि पुस्तकें अपने उचित स्थान पर ही मौजूद रहें।

पुस्तकालय में पुस्तकों के आदान–प्रदान की व्यवस्था ब्राउन या नेवार्क पद्धतियों के अनुसार होनी चाहिए। आज कल तो कम्प्यूटर से आदान–प्रदान किया जाने लगा है जिससे कि पाठकों को पुस्तक के आदान–प्रदान की प्रतीक्षा न करनी पड़े।

उत्तम कोटि की सन्दर्भ सेवाएं देकर पाठकों की सहायता की जा सकती है। संदर्भ पुस्तकालयाध्यक्ष के पदों की व्यवस्था की जानी चाहिए क्योंकि पाठकों में अधिकांष जिज्ञासाओं की पूर्ति तो संदर्भ पुस्तकालयाध्यक्ष ही कर देता है। इसी क्रम में सी0एस0 (CAS) तथा एस0डी0आई0 (SDI) आदि प्रलेखन सेवाओं के माध्यम से पाठकों की अभीष्ट पाठ्य सामग्री प्राप्त कराकर उनका समय बचाया जा सकता है।इसके अतिरिक्त पुस्तकालय सेवाओं में कम्प्यूटर का उपयोग करके पाठकों में अमूल्य समय को बचाया जा सकता है तथा कर्मचारियों के समय की भी बचत होती है।

पंचम सूत्र

पुस्तकालय एक वर्धनषील संस्था है (Library is a growing organism)

डा0रंगनाथन ने लिखा था–लाइब्रेरी इज ऐ ग्रोइंग अर्गनिज्म इसका आषय यह है कि डा0 रगंनाथन ने पुस्तकालय को जैविक तन्त्र माना है क्योंकि उन्होंने Organisation शब्द का प्रयोग नहीं किया है। जिस प्रकार किसी जीवधारी यथा–बच्चे का समय के साथ चतुर्मुखी विकास होता है अर्थात् उसके शरीर के सारे अंग बढ़ते है और वयस्कता के साथ–साथ उसमें आंतरिक विकास हो जाता है, उसी प्रकार पुस्तकालय के मुख्य घटक तत्वों जिसमें–भवन का आकार, पुस्तक संग्रह, पाठक तथा कर्मचारी शामिल है का भी समय के अनुसार विकास होना स्वाभाविक है। वर्धनषीलता के परिणाम स्वरूप भविष्य में पुस्तकालय को संगठनात्मक स्वरूप देते समय ऐसा सोचना तथा भावी आवष्यकताओं को ध्यान में रखकर सभी योजनाएं बनायी जाएं।

समय के साथ प्रलेखों की संख्या में वृद्धि होना स्वाभाविक है प्रलेखों से तात्पर्य पुस्तकालय की समस्त प्रकार की पाठ्यसामग्री से है। यह एक ऐसा तत्व है जिससे अत्यधिक वृद्धि होती है और पुस्तकालय भवन का निर्माण करते समय आगामी 20–30 वर्ष तक की कार्ययोजना बनानी चाहिए। पुस्तकों की संख्या में वृद्धि के साथ–साथ पुरानी व अनुपयोगी तथा जीर्ण–शीर्ण पुस्तकों को हटाते रहना चाहिए ताकि नयी पुस्तकों के लिए स्थान रिक्त हो सके। इसके अतिरिक्त नई तकनीकों का उपयोग करके अधिक स्थान घेरने वाली या नष्ट होने वाली पठन सामग्री को माइक्रोफिल्म, स्कैन करके, सी0डी0, आदि के रूप में सुरक्षित रखा जा सकता है।

पुस्तकालय के संभावित विस्तार को ध्यान में रखते हुए माडुलाकार योजना के अनुसार पुस्तकालय भवनों का निर्माण किया जा रहा है इसमें आवष्यकतानुसार आन्तरिक परिवर्तन की संभावना रहती है। वर्तमान समय में माइक्रोफार्म में प्राप्त होने वाले प्रकाषनों को रखने के लिए अधिक स्थान की आवष्यकता नहीं होती अतएव इनका भी प्राविधान प्रमुखता से करना चाहिए।

पुस्तकों की संख्या में वृद्धि के साथ–साथ पाठकों की संख्या में वृद्धि स्वाभाविक है। इसके साथ ही पुस्तकालय सेवाओं में वृद्धि होगी जिसके लिए अलग–अलग स्थान की आवष्यकता होगी।इसमें अतिरिक्त कमचारियों की संख्या में गुणात्मक व संख्यात्मक वृद्धि अवष्यम्भावी है। इन कर्मचारियों द्वारा पुस्तकालय सेवाओं के निष्पादन के कार्य के लिए अतिरिक्त स्थान की आवष्यकता होगी। इस संदर्भ में यह भी ध्यान रखना होगा कि पाठक की संख्या को देखते हुए आदान–प्रदान की ऐसी प्रणाली अपनानी चाहिए जिससे कम समय में अधिकाधिक पाठकों को सेवाएं दी जा सकें।

इस सम्बन्ध में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि नई तकनीकों का प्रयोग करके पुस्तकालय सेवाओं को उच्चीकृत तो किया ही जा सकता है साथ ही स्थान की समस्या का भी समाधान किये जानेमें सहायता मिलती है।

पुस्तकालयों के बदलते स्वरूपमें पंच सूत्रों की व्याख्या

डा0 रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित पुस्तकालय विज्ञान के पंच सूत्र बहुत ही महत्वपूर्ण है। पूरी दुनिया के पुस्तकालय वैज्ञानिकों ने इनकी प्रषंसा की है। भारत में पुस्तकालय के क्षेत्र में यह पंच सूत्र बहुत ही प्रभावी साबित हुए है। अनेक राज्यों में सार्वजनिक पुस्तकालय अधिनियम लागू किये जा चुके हैं और इनके अन्तर्गत पुस्तकालय सेवाओं का संचालन किया जा रहा हैं। अनेक पुस्तकालयों में मुक्त प्रवेष प्रणाली लागू की जा चुकी है तथा पुस्तकालय की स्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुए है।

आज के पुस्तकालयों के बदलते स्वरूप सेवाओं तथा पाठयसामग्री की विविधताओं के दौर में भी इन पंच सूत्रों का अपना अलग स्थान है। पुस्तकालय के बदलते स्वरूप में पंच सूत्रों की व्याख्या करते समय हम थोड़ा सा शब्दों का परिवर्तन करके हम इन सूत्रों का प्रयोग कर सकते है। अर्थात् पुस्तकों के स्थान पर प्रलेख परिवर्तित रूप में सूचना और पुस्तकालय के स्थान पर सूचना प्रणाली नाम का प्रयोग किया जा सकता है। पुस्तकालय के बदलते स्वरूप में पंचसूत्रों को निम्नलिखित रूप से व्यक्त किया जा सकता है –

1. सूचना उपयोग के लिए है।
2. प्रत्येक उपयोगकर्ता का उसकी अभीष्ट सूचना मिले।
3. प्रत्येक सूचना को उसका उपयोगकर्ता मिले।
4. उपयोगकर्ता का समय बचाएं।
5. सूचना प्रणाली वर्धनषील है।

प्रथम सूत्र के अनुसार सूचना की उपलब्धता के आधार पर किसी स्रोत को सूचना का स्रोत स्वीकार किया जाता है। सूचना का महत्वपूर्ण होना और उसके पूर्ण लाभ के लिए इसका संग्रह, संस्थान, प्रक्रिया तथा उपयोग करना विकास के लिए आवष्यक होता है। राष्ट्रीय विकास के लिए सूचना का एकांगीकरण और उपयोग के लिए उपलब्धता इस सूत्र के अन्तर्गत आता है।डिजिटल इरा में विज्ञान एवं तकनीकी मंत्रालय ने 16.07.2014 ने शोध के लिए ओपेन एक्सेस रिर्सोसेस को अनिवार्यतया उपलब्ध कराने की व्यवस्था की।यूरोपियन ययूनियन ने भी अपने प्रोजेक्ट पर रिसर्च के लिए ओपेन एक्सेस रिर्सोसेस को अनिवार्यतया उपलब्ध कराने की व्यवस्था की।विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से शोधकर्ताओं को ओपेन एक्सेस रिर्सोसेस एवं डिजिटल सूचना प्रणाली की उपलब्धता तथा उसके अधिकाधिक उपयोग का प्रषिक्षण भी उपयोगकर्ताओं को प्रदान किया जा रहा है।

द्वितीय सूत्र का मुख्य उद्देष्य है कि प्रत्येक उपयोगकर्ता को उसके प्रयोग के लिए आवष्यक सूचना उपलब्ध करायी जाय। सूचना मूल रूप में अर्थात् जैसी ही उसी रूप में उपयोगकर्ता तक पहुंचनी चाहिए। सूचना का संकलन भी विषय क्षेत्र के उपयोगकर्ताओं को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए।प्रत्येक उपयोगकर्ता को उसकी आवष्यकता के अनुसार विषिष्ट सूचना चाहे वह पुस्तकालय मे उपलब्ध हो अथवा इंटरनेट पर उपलब्ध हो उसके कम्प्यूटर पर उपलब्ध कराने की व्यवस्था सुनिष्चित की जा रही है। इसके लिए सरकार की तरफ से, विभिन्न संस्थाओं की तरफ से तथा समाज की तरफ से कदम उठाए गए हैं।

तृतीय सूत्रका तात्पर्य यह है कि उपयोगकर्ता केन्द्रित सूचना का संकलन किया जाना चाहिए। इससे उस उपयोगकर्ता द्वारा किये जा रहे कार्यों से समाज, राष्ट्र की प्रगति संभावित होती है। सूचना के

जन्म अर्थात उत्पादन से लेकर उसके उपयोग तक विषिष्ट उपयोगकर्ता का ध्यान रखना आवष्यक होता है जिससे सूचना का संग्रहण तथा उपयोग व्यावसायिक सेवा के रूप में हो सके।प्रत्येक सूचना अर्थात अनिवार्यतया प्रत्येक संभव सूचना जो कि किसी के भी पास हो, किसी भी समय तथा किसी भी फार्मेट में भी हो उपयोग के लिए उपलब्ध करायी जा रही है।

चतुर्थ सूत्र के अनुसार सूचना के संग्रहण से लेकर उसके उपयोग तक में लाने के लिए यह आवष्यक है कि आधुनिक तकनीकों का प्रयोग किया जाय ताकि उचित समय पर उचित उपयोगकर्ता तक सूचना पहुॅच सके और उसके मूल्यवान समय का उपयोग समाज व राष्ट्र की प्रगति में किया जा सके।

पंचम सूत्रके अनुसार ज्ञान व सूचना में वृद्धि और विकास होता रहता है इसे नवीन तकनीकों व कार्यक्रमों की सहायता से उपयोगकर्ताओं की आवष्यकताओं की पूर्ति हेतु सूचना संस्था को विकसित एवं उन्नत किये जाने की प्रणाली का विकास करना है। नेटवर्किंग का उपयोग सूचना के विनिमय और संसाधन सहभागिता के लिए प्रयुक्त हो रहा है, सूचना केन्द्र उपने परिवर्तित स्वरूप में आधुनिक सूचना सेवाओं की व्यवस्था कर अपने उपयोगकर्ताओं को उनकी मांग और आवष्यकतानुसार उन्नतिषील सूचना उपलब्ध कराने के लिए प्रयत्नषील है।लगभग 500 मिलियन ट्वीट प्रत्येक दिन होते हैं, 4 मिलियन घंटों से भी ज्यादा समय के वीडियो प्रतिदिन यूॅट्यूब पर अपलोड किये जाते हैं। प्रतिदिन 6 बिलियन गूगल सर्च किए जा रहे हैं। यहां यह उल्लेखनीय है कि इस सूचना विस्फोट के युग में पुस्तकालयों को इसके अनुसार ढलना होगा और सूचना सेवाएं प्रदान करनी होगी अन्यथा प्रसिद्ध वैज्ञानिक चार्ल्स डार्विन के अनुसार समय के साथ उसका अस्तित्व ही खतरे में पड़ जायेगा।

सन्दर्भ

1. सूद, एस0पी0, प्रलेखन एवं सूचना विज्ञान, राज पब्लिषिंग हाउस, जयपुर, 1996.
2. त्रिपाठी, एस0एम0, सूचना एवं संदर्भ के प्रमुख स्रोत, वाई0 के0 पब्लिषर्स, आगरा, 2005.
3. त्रिपाठी, एस0एम0, आधुनिक ग्रन्थालयः व्यवस्था एवं संचालन के मूल तत्व, अजन्ता पब्लिकेषन्स दिल्ली, 1983.
4. षर्मा प्रहलाद, इंटरनेट और पुस्तकालय, ज्योति प्रकाषन, जयपुर, 2002.
5. http://lib.jnu.ac.in
6. http://hindinideshalaya.nic.in
7. http://rrrlf.nic.in